https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

एन एल आर पी-१२ से संबंधित आवर्तक फीवर (बुखार, ज्वर)

के संस्करण 2016

3. दैनिक जीवन

3.1 इस बीमारी से माता-पिता का दैनिक जीवन कैसे प्रभावित होता है?

बार-बार बुखार आने की वजह से बच्चे और माता-पिता के दैनिक जीवन पर असर पड़ सकता है। कई बार बीमारी का पता चलने के लिए काफी समय लग जाता है जिसकी वजह से यह समस्या मनोवैज्ञानिक हो जाती है। कई बार बच्चों पर कई तरह की चिकित्सा प्रक्रिया बेवजह होती है।

3.2 स्कूल का क्या होगा?

बीमार बच्चों का स्कूल जाना बंद नहीं करना चाहिए। ऐसा हो सकता है कि बार बार बीमारी का दौरा पड़ने से बच्चे को स्कूल जाने में समस्या हो। इसलिए यह ज़रूरी है कि बच्चे के शिक्षकों को इस बीमारी की पूरी जानकारी हो। ऐसा करने पर वे बच्चे की सारी ज़रूरतों पर ध्यान दे सकेंगे। इससे बच्चे की पढ़ाई पर विपरीत असर नहीं होगा और वह अपने मित्रों एवं वयस्कों द्वारा स्वीकारा और सराहा जाएगा। पेशेवर दुनिया में भविष्य में एकीकरण करने के लिए ऐसा करना बहुत जरूरी है।

3.3 खेल-कूद के बारे में क्या राय है?

खेल-कूद हर बच्चे के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस चिकित्साविधान का उद्देश्य यह है कि बच्चे अपनी ज़िंदगी जहॉं तक हो सके, सामान्य रूप से जिएँ और अपने आप को दूसरे बच्चों से अलग न समझें। इसलिए सहनशीलता के अनुसार सभी कार्यकलाप किए जा सकते है। लेकिन, बीमारी के दौरान शारीरिक गतिविधि को सीमित रखना होगा और समय-समय पर आराम भी करना होगा।

3.4 क्या खान-पान पर कोई पाबंदी है?

खान-पान पर कोई खास पाबंदी या परहेज नहीं है। बच्चे के आयु के अनुसार पौष्टिक आहार

खाना ज़रूरी है। खाने में उचित मात्रा में प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन का होना भी आवश्यक है। ज़रूरत से ज़्यादा खाना नहीं खाना चाहिए क्योंकि यह देखा गया है कि कॉरटीकोस्टेराइड्स लेने वाले मरीज़ों को दवाई की वजह से ज़्यादा भूख लगती है।

3.5 मौसम के कारण क्या रोग पर कोई प्रभाव पड़ता है?

ठंडी या जाड़े से बीमारी के लक्षण शुरु हो सकते हैं।

3.6 क्या बच्चे को टीके लगाए जा सकते है?

जी हॉ, बच्चे को टीके ज़रूर लगाए जा सकते है। लेकिन जीवित तनु टीके देने के पहले चिकित्सक/डॉकटर को बीमारी के बारे में जानकारी देनी होगी क्योंकि ऐसे टीके चिकित्सा विधान से असंगत हो सकते हैं।

3.7 यौन जीवन, गर्भधारण और परिवार नियोजन के बारे में क्या किया जा सकता है?

इस विषय पर आज तक कोई लिखित जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन, सामान्य नियमानुसार अन्य बीमारियों की तरह गर्भधारण के पूर्व ही इन दवाइयों के भ्रूण पर होनेवाले असर के बारे में सोच लेना उत्तम है।